International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 1 Issue 1 || December. 2011 || PP. 46-49

पं. हीरालाल शास्त्री के जीवन में समकालीन नेताओं का प्रभाव

रंजीता जाना
शोधार्थी
इतिहास विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

असाधारण और गौरवपूर्ण व्यक्तित्व के प्रतीक हीरालाल शास्त्री जी के बहुमुखी पक्षों को लेखनी की परिधि में बाँधना कठिन कार्य है। वह व्यक्ति नहीं संस्था थे। कुछ रचनात्मक, राजनीतिक कार्यकर्त्ता प्रशासक, क्रांतिदृष्टा, विचारक, वक्ता लेखक न जाने कितने रूप थे उनके व्यक्तित्व के। हीरालाल शास्त्री को इतना महान व्यक्तित्व किसने बनाया ? कौन थे शास्त्री जी के व्यक्तित्व निर्माता?

एक दिन पण्डित अर्जुन लाल जी सेठी जयपुर आए। शास्त्री जी अपने दो चार मित्रों के साथ उनसे मिले। उन्होंने और बातचीत के लिए अपने डेरे पर बुलाया जहां शास्त्री जी अकेले ही पहुंचे क्योंकि शास्त्री जी को अपनी नौकरी छोडने की पक्की लगन थी। सेठी जी बोले – तुम महा मूर्ख हो जो यह सोचते हो कि तुम अपने पास बीसेक हजार रुपया कर लोगे तब नौकरी छोडोगें– मैं कहता हूँ तुम्हारे पास बीस हजार क्या बीस सौ भी इस जिन्दगी में तो नहीं होने वाले। तुम पर कर्जा भले ही हो जाये। सेठी जी ने शास्त्री जी से कहा कि आँख बन्द करके समुद्र में कूदना हो तो कूद जाओं, तुम तिर जाओगें। सेठी जी की यह चाबी लग गई। इस घटना से पूर्व जब जमनालाल बजाज भी जयपुर आये तो हरिभाऊ जी उपाध्याय के जरिए उन्होंने शास्त्री जी को मिलने बुलाया था और राज की नौकरी छोड़ने की सलाह दी थी। लेकिन नौकरी छोडने में सबसे बड़ी बाधा शास्त्री जी के लिए पुरोहित गोपीनाथ जी स्वयं थे। पुरोहित जी शास्त्री जी को पुत्रवत स्नेह किया करते थे। पुरोहित सर गोपीनाथ का स्नेहाश्रय शास्त्री जी को हर स्तर पर प्राप्त हुआ।

शास्त्री जी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं '' **मेरे सामने पुरोहित साहब का उदाहरण था जो रायबहादुर, सी.आई. ई. और नाइटहुड की उपाधियों से अंलकृत थे, बाद में सोना, ताजीम और जागीर पा चुके थे।''** । लोकमान्य तिलक के प्रति युवक शास्त्री जी इतने श्रद्धालु थे कि उनके देहान्त पर ये फूट–फूट कर रोये थे। शास्त्री जी पिलानी में बिड़लाजी के पास पहुँच गए। पिलानी से श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय के साथ शास्त्री जी रचनात्मक कार्यो व आश्रम व्यवस्थाओं के अध्ययन व गाँधी जी के मार्गदर्शन के लिए साबरमती आश्रम गए। शास्त्री जी पर गाँधी जी का प्रभाव जीवन पर्यन्त रहा, उन्होंने हर कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व गाँधी जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। शास्त्री जी का मानना था कि गाँधी जी जैसा सोचते हैं और वैसा बोलते है और जैसा बोलते हैं वैसा ही करते हैं। शास्त्री जी ने घनश्याम दास जी की प्रेरणा से ही हिन्दुस्तान टाइम्स व विश्वामित्र समाचार पत्र में कई लेख राज्य के शासन के बारे में छपवाए। शास्त्री जी जमनालाल बजाज के लिए कृतज्ञता अपने ग्रन्थ प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र में व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि मैं जमनालाल जी का कर्जा अपने उपर मानता हूँ जिन्होंने मुझे घनश्याम दास जी तक पहुँचाया। शास्त्री जी वर्धा पहुँचकर गाँधी जी से मिले। शास्त्री जी के पास गाँधी जी के हाथ से लिखी हुई बहुत सी सामग्री इकट्ठी हो गई थी।

12 मई, 1928 से वनस्थली में जीवन कुटीर नाम की छोटी सी संस्था द्वारा मुख्यतः वस्त्र स्वावलंबन का काम शुरू हुआ। जीवन कुटीर के इस कार्यक्रम के लिए शास्त्री जी को गाँधी जी का आशीर्वाद मिल चुका था। वर्धा में जमनालाल जी ने शास्त्री जी से कहा था ''इस प्रकार अकेले गाँव में जाकर बसोगे तो तुम दुःख पाओगे'' इस प्रकार शास्त्री जी ने जमनालाल जी से कह दिया '' जब मैं दुःख पाऊँगा तो आप के पास आ जाऊँगा, बाकी भविष्य में मेरे लिए दुःख पाने की कल्पना से आप अभी से क्यों दुःख पा रहे हैं।'' शास्त्री जी के पास अपने स्वयं के आग्रह और आत्मविश्वास के अलावा गाँधी जी के आशीर्वाद का बल था। बाद में जमनालाल बजाज जी व घनश्याम दास जी भी वनस्थली के काम में बहुत दिलचस्पी लेने लगे थे।

जीवन कुटीर के जमाने में शास्त्री जी का गाँधी जी से सम्पर्क काफी रहा। वर्ष में एक या दो बार शास्त्री जी वर्धा जाते और अपने कार्य की रिपोर्ट गाँधी जी को देते और अपनी शंकाओं का समाधान भी कर लेते थे। गाँधी जी ने शास्त्री जी को मिलने बुलाया, प्रार्थना के बाद घूमना शुरू करने के समय बोले इतने बजकर इतने मिनट पर मुझे अमुक जगह खड़े मिलना। शास्त्री जी गाँधी जी की परीक्षा में पास हो गए। एक दिन गाँधी जी ने शास्त्री जी को अपने साथ भोजन के लिए बुला लिया ओर साथ में बिठाया। जब भोजन पश्चात् शास्त्री जी अपनी थाली उठाने लगें तो गाँधी जी ने उन्हें नहीं उठाने दी वे बोले तुम इस समय मेहमान हो। गाँधी जी की निगाह को शास्त्री जी पैनी मानते थे जिनकी निगाहों से कुछ भी छिपना असंभव था। शास्त्री जी द्वारा स्थापित संस्था जीवन कुटीर के साथी प्रताप ने एक घन्टे में दो हजार गज सूत कात दिया, गाँधी जी को यह बात अच्छी लगी। पर चर्खा उन्हे पसंद नहीं आया, क्योंकि उसकी नाप उन्हें सही नहीं लगी।

शास्त्री जी ने अपने रचनात्मक कार्यो में सर्वाधिक महत्त्व वस्त्र स्वावलंबन को दिया, क्योकि वे स्वयं गाँधी जी से प्रभावित थे। शास्त्री जी मानते थे महात्मा गाँधी बार–बार चर्खे द्वारा भारत में स्वराज प्राप्ति की बाते कहते थे। जिस प्रकार गाँधी जी रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा समाज को कायम करना चाहते थे उसी प्रकार शास्त्री जी ने भी किया। शास्त्री जी गाँधी जी के 'सत्य' से भी प्रभावित थे, जिस प्रकार गाँधी जी कर्म को ही सत्य मानते थे उसी प्रकार शास्त्री जी ने भी अपने जीवन में कर्म को सर्वोपरि व सत्य मानकर कार्य किया।

जिस प्रकार गाँधी जी शान्ति को महत्त्वपूर्ण माना करते थे, उसी प्रकार शास्त्री जी जीवन में शान्ति शब्द को अच्छा माना गाँधी जी से सीधा सम्पर्क होने व जमनालाल जी के बेहद कहने के बावजूद भी शास्त्री जी ने गाँधी सेवा संघ का सदस्य बनना अस्वीकार कर दिया था। जीवन कुटीर का काम अच्छा और सफल माना गया और संस्था को चरखा संघ की ओर से आर्थिक सहायता देने की बात चली। शास्त्री जी ने चरखा की कौन्सिल में सरदार बल्लभ भाई पटेल से कहा कि आप अहमदाबाद में बैठकर जीवन कुटीर का काम नहीं देख सकते। तब फिर बिना किसी शर्त के जीवन कुटीर के लिए चरखा संघ की सहायता मंजूर हुई। जब वनस्थली में लड़कियों को शिक्षा का काम शुरू करने की बात आई तो गाँधी जी कहा था– जितनी लड़कियों को रतन (शास्त्री जी की पत्नी) सम्भाल सकती है उतनी ही लड़कियाँ यानि दसेक रखो। यही बात विनोबा जी ने कही। जब प्रजामंडल का जमाना आया तब शास्त्री जी ने गाँधी जी, वल्लभ भाई पटेल व जमनालाल बजाज के साथ प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप में कार्य किया। जयपुर सत्याग्रह से कुछ पहले जब शास्त्री जी गाँधी जी के पास पहुँचे, तो शास्त्री जी को देख दूर से ही गाँधी जी बोले–''यह आ गया लडवैया।''

शास्त्री जी द्वारा नागरिक अधिकारों के लिए किया गया सत्याग्रह पूर्णतया गाँधी के विचारों से प्रभावित होकर किया गया था। 1942 का समय आया जब भारत छोड़ो आन्दोलन आरंभ हुआ। या तो अंग्रेंजो से लड़ो या राज्य हमें सम्भला दो, इस आश्रय का अल्टीमेटम सा राज्यों के लिए मसविदे के रूप में किसी ने तैयार किया, पर उस मसविदे पर कोई विचार होता इससे पहले ही गाँधी जी आदि पकड़े गए। गाँधी जी के जेल से बाहर आने पर अपने समाधान हेतु शास्त्री जी ने 20.01.45 को गाँधी जी से बात की। अगस्त 1942 से लेकर बाद तक जो कुछ हुआ वह शास्त्री जी ने गाँधी जी को सुनाया व पूछा–'' जयपुर प्रजामण्डल ने जो कुछ किया उसमें क्या कुछ अनुचित था? गाँधी जी ने लिखकर दिया–"मेरा अब कुछ कहना व्यर्थ है, फिर भी कह सकता हूँ कि जो कुछ आपने किया उसमें मैं कुछ अनुचित नहीं पाता।"

एक दिन गाँधी जी बोले '' मैने बहुत सुना है तुम्हारी संस्था के बारे में। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी शक्ति का अपव्यय होता है। शास्त्री जी ने कहा– यह तो बड़ी सख्त राय आपने जाहिर की है। आपने वनस्थली आने का वादा कर रखा है तथा मुझसे कह रखा कि जहाँ कैलाश (यानी वनस्थली) होगा। वहीं शंकर (यानी गाँधी जी) पहुँच जाएँगे। आप एक बार वनस्थली चलो और अपने हाथ से उसका जैसा चाहो कायापलट कर दो।'' तब गाँधी जी बोले मैने वनस्थली के बारे में अच्छा ही सुना है और मेरा अभिप्रायः भी अच्छा ही है। जमनालाल ने मुझसे कहा था– ''हीरालाल शास्त्री जैसा सच्चा बहादुर और कुशल कार्यकर्त्ता मैने दूसरा नहीं देखा'' इस पर शास्त्री जी ने गाँधी जी से कहा कि मैने कभी नहीं सोचा था कि आप इतनी बड़ी अपेक्षा मुझसे रखते है। गाँधी जी ने एक बार शास्त्री जी को लिखा था– **''वनस्थली मेरे दिल में बसी है''**

शास्त्री जी द्वारा वनस्थली में दिनांक 27.01.70 में दिए गए भाषण से स्पष्ट पता चलता है कि शास्त्री जी गाँधी से बहुत प्रभावित थे, उनके द्वारा बताये मार्ग पर चले ऐसा शास्त्री जी चाहते थे तथा अन्य भारतवासी भी उसी मार्ग पर चले ऐसा शास्त्री जी चाहते थे।

स्पष्ट है शास्त्री जी गाँधी जी के विचारों से बहुत प्रभावित हुए उन्होने अपने पूरे जीवन में इस प्रभाव को जीया तथा गाँधी जी द्वारा दिखाये गये मार्ग का अनुसरण किया। न सिर्फ शास्त्री जी जब तक जीये तब तक ही गाँधीवादी मार्ग का अनुसरण किया वरन आज भी शास्त्री जी द्वारा स्थापित अद्वितीय संस्था 'वनस्थली विद्यापीठ के माध्यम से गाँधी जी द्वारा सुझाए गये मार्ग का अनुसरण हो रहा है। वर्तमान में भी संस्था ने खादी को महत्त्व दिया है। जहाँ हाथ से खादी बनायी जा रही है व रचनात्मक कार्य किए जा रहे हैं। शास्त्री जी पर गाँधी जी का इतना प्रभाव रहा कि यह संस्था गाँधीवादी संस्था के रूप में प्रसिद्ध है।

विनोबा जी : – शास्त्री जी का विनोबा जी के साथ ज्यादा संपर्क नहीं हुआ था परन्तु शास्त्री जी का बिहार–बंगाल की पद यात्रा के दौरान विनोबा जी के साथ रहने का कुछ अवसर प्राप्त हुआ। जब शास्त्री जी पर विनोबा जी का स्वाभाविक प्रभाव पड़ा। वैसे तो प्रारंभ से ही शास्त्री जी विनोबा जी को सूक्ष्म बुद्धि का मानते थे परन्तु इस यात्रा के दौरान शास्त्री जी को ज्ञात हुआ कि विनोबा जी पारदृष्टा तत्त्वज्ञानी हैं। आध्यात्मिक साधना के रूप में बड़ी कमाई कर चुके।

आचार्य विनोबा भावे का सर्वोदय का विचार शास्त्री जी के कल्पना के अनुकूल पड़ता था, जिस प्रकार के समाज की रचना विनोबा भावे जी की करना चाहते थे, ठीक उसी प्रकार शास्त्री जी भी चाहते थे। विनोबा जी सर्वोदय सिद्धान्त को मानने वाले थे। सर्वोदय का उद्देश्य भी ऐसे समाज की रचना का है जो शासन मुक्त हो या कम से कम शासन सापेक्ष हो, जो अहिंसक अर्थात दण्ड निरपेक्ष और इसलिए भय वर्जित हो, निर्भय हो जिसकी व्यवस्था का आधार स्वशासन और स्वावलंम्बन हो। इस प्रकार शास्त्री जी की उक्त प्रार्थना के तीनों तत्त्व गरीबी, अज्ञान और भय का निर्मूलन

सर्वोदयी समाज व्यवस्था में हो सकता है। विनोबा जी का मानना था कि अन्य वस्त्र जैसी प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति घर में ही होनी चाहिए। व्यक्तिगत उत्पादन के साधनों के अलावा बाकी सब साधनों का स्वामित्व गाँव का होना चाहिए या राष्ट्र कर का।

लेकिन विनोबा जी की पद यात्राओं के माध्यम से शास्त्री जी ने भूदान और ग्रामदान आन्दोलन का व्यवहारिक दृष्टि से अध्ययन करना भी आवश्यक समझा। शास्त्री जी का विचार था कि विनोबा जी से मार्गदर्शन प्राप्त कर राजस्थान के किसी एक जिले को कार्य क्षेत्र बनकर सघन सर्वोदय कार्यक्रम से समाज में परिवर्तन किया जाए। इसी आशा को लेकर वे बिनोबा जी की पदयात्राओं में भी शामिल हुए। लगभग दो सप्ताह तक इन यात्राओं में शास्त्री जी बिनोबा जी के साथ रहें। विनोबा जी के सामान्य प्रवचनों में जो कुछ कहा जाता उसके अतिरिक्त भी शास्त्री जी विभिन्न प्रश्नों को लेकर उनसे अलग चर्चा करते थे। चर्चा के अन्त में शास्त्री जी ने आचार्य विनोबा भावे से कहा कि वे एक जिले में व्यवहारिक कार्यक्रम की रूपरेखा स्पष्ट रूप से उन्हें लिखा दे ताकि उसी के अनुरूप वे कार्यक्रम चला सके। विनोबा जी ने कहा– ''मैने सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर दिया। व्यावहारिक कार्यक्रम आप स्थानीय परिस्थितियों को देखकर बना लें। शास्त्री जी को इस उत्तर से सन्तोष नहीं हुआ। सर्वोदय के सिद्धान्तों से पूर्णतः सहमत होते हुए भी वे कोई ऐसा कार्यक्रम शुरू करने के पक्ष में थे, जिसका क्रान्तिकारी प्रभाव जनमानस पर हो।

इस प्रकार शास्त्री जी की दृष्टि में विनोबा जी पारदृष्टा, तत्त्वज्ञानी थे। उन्होंने लिखा विनोबा जी सन्त हैं, ज्ञानी हैं, कर्मयोगी है। अहिंसक समाज रचना के लिए चलाया गया उनका भूदान कार्यक्रम कई सालों से हमारे सामने है। इस प्रकार विनोबा जी का प्रभाव किसी न किसी रूप में शास्त्री जी के जीवन में परिलक्षित होता है। गाँधी जी व विनोबा भावे जी जैसे राष्ट्रीय नेताओं के अतिरिक्त शास्त्रीजी सरदार बल्लभभाई पटेल से भी अपने जीवन में प्रभावित हुए थे। ऐसा हमें शास्त्री जी की आत्मकथा से भलिभाँति ज्ञात होता है। शास्त्री जी सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ पहली बार संपर्क के अप्रत्यक्ष रूप से तब आए जब शास्त्री जी ने अपनी सरकारी नौकरी छोडकर रचनात्मक कार्यक्रम में आजीवन सहयोग देने का व्रत लिया। जेठाभाई के पास से इन्होंने कताई–बुनाई रंगाई आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। साथ ही बारडोली (गुजरात) में सरदार पटेल की प्रेरणा से जुगत राम भाई दवे द्वारा बेडछी में रचनात्मक कार्यक्रम के अध्ययन हेतु शास्त्री जी गुजरात गए। इस व्यापक अध्ययन चितंन के आधार पर ग्राम विकास कार्यक्रम का एक मोटा सा चित्र उनके सामने बन गया था। शास्त्री जी के रचनात्मक कार्य वल्लभ भाई पटेल के विचारों से भी प्रभावित हुए है।

जयपुर में उत्तरदायी शासन को एक वर्ष भी नहीं हुआ था कि रियासतों के एकीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई व राजस्थान उद्घाटन 30 मार्च 1949 को जयपुर में होना तय हुआ। इसके लिए केन्द्रीय गृह मंत्री जो कि सरदार वल्लभ भाई पटेल थे जिनकों जयपुर 29 मार्च को आना था। किन्तु उनके हवाई जहाज को तकनीकी खराबी के कारण दिल्ली के रास्ते में शाहपुरा के निकट कहीं उतरना पडा। उन दिनों संचार सुविधा इतनी चुस्त नहीं थी कि खबर कहीं जा सकती। यहाँ किसी अनिष्ट आशंका से सब लोग चिन्तित थे। रियासत विभाग के सचित वी.पी. मेनन जयपुर पहुँच चुके थे वे राजस्थान निर्माण के प्रति इतने दृढ़ प्रतिज्ञ थे कि एक बार तो उन्होने सशंक स्वर में शास्त्री जी से पूछा– भगवान न करें लेकिन अगर सरदार पटेल को कुछ हो गया तो क्या होगा? शास्त्री जी को निरूत्तर देखकर अगले ही क्षण उन्होंने कहा '' राजस्थान का निर्माण तो होगा, मैं अभी दिल्ली जाकर जवाहर लाल जी को ले आऊँगा। और राजस्थान का उद्घाटन समय पर करा दूँगा। सरदार का यही स्वप्न था।'' आखिर रात के करीब सरदार पटेल जयपुर में रामबाग पैलेस में पहुँच गए। शास्त्री जी को उन्होंने फोन किया और मिलने पर पहला सवाल किया– 'क्या हुआ किशनगढ़' में ? ''शास्त्री जी ने कहा–''सब कुछ ठीक हो गया, मेरा शपथ लेना तय हो गया।''

जयपुर महाराज को राजप्रमुख बनाने के लिए सरदार पटेल ने शास्त्री जी के अलावा सर्वश्री जयनारायण व्यास, माणिक्यलाल वर्मा, और गोकुल भाई भट्ट, श्री जयनारायण जी व्यास व श्री माणिक्य लाल वर्मा की लिखित राय ली थी। एक दिन सरदार पटेल ने चारों को बुलाया। पहले गोकुल भाई, फिर वर्मा जी और व्यास जी और सबसे अन्त में शास्त्री जी को बुलाया। सरदार ने कहा इन लोगों की राय आपकों मुख्यमंत्री बनाने की है।

शास्त्री जी पर राजस्थान के एकीकरण की भारी जिम्मेदारी थी। राज्यों के एकीकरण में शास्त्री जी ने लौह पुरूष सरदार पटेल को राजस्थान में सर्मथन व महत्वपूर्ण योगदान दिया। शास्त्री जी की राय में पटेल एक योग्य व भले व्यक्ति थे। जो शास्त्री जी की बात को मान लिया करते थे, तथा शास्त्री जी भी हमेशा पटेल की बातों को मानते थे। शास्त्री जी का पटेल जी से कभी झगड़ा नहीं हुआ था। क्योकि शास्त्री जी मानते थे मुझे काम करना है झगड़ा नहीं। केवल एक बार शास्त्री जी ने आग्रह किया कि वित्त सचिव बाहर से नहीं आएगा, अमुक स्थानीय व्यक्ति को वित्त सचित बनाया जाए। यह झगड़ा दिल्ली तक पहुँचा, सरदार तक कोई बात जाती तो वे शास्त्री जी को समर्थन करते थे जैसा कि एक बार हुआ। सवाल यह था कि शास्त्री जी अपने एक कांग्रेसी साथी को पब्लिक सर्विस कमिशन का सदस्य बनाना चाहते थे परन्तु मेनन इसका विरोध कर रहें थे। सरदार के कान तक ये आवाज पहुँच गई उन्होंने दूर से ही पूछा– क्या बात है? शास्त्री जी ने बता दिया मेनन अमुक व्यक्ति को पब्लिक सर्विस कमिशन का सदस्य बनाने का विरोध कर रहा है। सरदार बोले नहीं कुछ नहीं, आप तो बनाओ। इसी प्रकार एक बार जयपुर महाराजा राज्य के खजाने के कुछ सोने को अपना बता रहे थे। सरदार ने शास्त्री जी से पूछा–''सोना किसका है? शास्त्री जी ने कहा पहले तो राजा का ही रहा होगा, पर बाद में राज्य के बजट में दर्ज हो गया, सो अब सोना राज्य का मानना पडेगा, सरदार ने शास्त्री जी से पूछा–

आपकी राय क्या है ? शास्त्री जी ने कहा '' मेरी राय में सोना महाराजा को देना चाहिए। सरदार बोले क्यों? इस पर शास्त्री जी ने कहा–इतना बड़ा राज्य किसी का आपने ले लिया है सो इतना सा (एक करोड़ के करीब) सोना उसे दे देने में क्या संकोच करना चाहिए।'' सरदार तुरंत बोले ''ठीक है, आपकी राय ठीक है।''

इस प्रकार शास्त्री जी से पटेल का निकट संपर्क रहा। जिस प्रकार सरदार वल्लभ भाई पटेल भारत के लौहपुरूष कहलाए उसी प्रकार पं. हीरालाल शास्त्री को राजस्थान का लौहपुरूष कहा गया।

इस प्रकार शास्त्री जी कई राष्ट्रीय नेताओं के संपर्क में आए और उनसे प्रभावित हुऐं। ऐसा नहीं है उन पर गाँधी जी, पटेल विनोबा भावे, नेहरूजी सरीखे राष्ट्रीय नेताओं का ही प्रभाव पड़ा। वरन अर्जुन लाल सेठी, सर गोपीनाथ पुरोहित, जमनालाल बजाज, हरिभाऊ उपाध्याय इत्यादि से भी शास्त्री जी प्रभावित हुए। शास्त्री जी द्वारा राजस्थान में जो रचनात्मक कार्यक्रम किये गये उनको करने में जितना सहयोग व मार्गदर्शन गाँधी जी, विनोबा जी का रहा उतना ही सेठ जमनालाल बजाज का भी रहा। सेठ जमनालाल बजाज सामाजिक सुधार के क्षेत्र में निर्भयता से आगे बढ़ थे। गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों में उनकी अटूट श्रद्धा थी। जमना लाल बजाज का जीवन पूर्णतया शास्त्री जी को प्रेरित करने वाला था। बजाज बहुत ही शुद्ध, सरल और सादी प्रकृति के व्यक्ति थे। ऐसा व्यक्तित्व किसी के लिए प्रेरणा को स्रोत बन सकता है, और शास्त्री जी के लिए भी बना।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि श्री हीरालाल शास्त्री न केवल राजनैतिक नेता थे वरन गाँधी जी के रचनात्मक कार्यो को असली रूप देने वाले नेता थे। उन्होने अपनी रचनात्मक प्रवृत्ति के जरिए देश की सेवा की है। वे यथा नाम तथा गुणी थे। उनमें आत्मअभिमान आत्मगौरव बहुत था। तथा ऐसे व्यक्तित्व के निर्माण में उनके पिता, गुरू, राजनीतिक अग्रज अर्जुनलाल सेठी जी, सर गोपीनाथ पुरोहित जी, जमनालाल बजाज, गाँधी जी, पटेल जी व विनोबा जी जैसे दिग्गज व्यक्तियों का योगदान था। इन सभी व्यक्तियों से शास्त्री जी प्रभावित हुए व इनसे प्रेरणा प्राप्त की।

संदर्भ

1. वन श्री पत्रिका, अंक 1947–48 'हीरालाल शास्त्री जी और शिक्षा',
2. भगवान सहाय त्रिवेदी : राजस्थान के लौह पुरूष पं. हीरालाल शास्त्री, पृ.69
3. पं. हीरालाल शास्त्री : प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र पृ.24
4. भगवान सहाय त्रिवेदी : राजस्थान के लौह पुरूष पं. हीरालाल शास्त्री पृ. 14
5. वही. पृ. 19–20
6. मदन लाल गोपाल शर्मा : वनस्थली का वानप्रस्थी, पृ. 6
7. पं. हीरालाल शास्त्रीः प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र, पृ. 42
8. वही. पृ. 265–266
9. पं. हीरालाल शास्त्री : प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र, (आत्म कथा) पृ. 267
10. भगवान सहाय त्रिवेदी : राजस्थान के लौह पुरूष पं. हीरालाल शास्त्री, पृ.26
11. लोकवाणी साचार पत्र : गाँधी जयंती या चरखा जयंती–सितम्बर 21.1946
12. हरिजन सेवक : रचनात्मक कार्यक्रम–सत्य पर अमल, 4–4–1948
13. लोकवाणी : गाँधी जी का उपवास, फरवरी 16, 1943
14. पं. हीरालाल शास्त्री : प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र, (आत्म कथा) पृ. 269
15. वही, पृ. 288
16. शास्त्री जी द्वारा दिया गया भाषण, वनस्थली दिनांक 27–1–70
17. पं. हीरालाल शास्त्री : प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र, पृ. 574
18. वही, पृ. 301
19. भगवान सहाय त्रिवेदीः राजस्थान के लौह पुरूष पं. हीरालाल शास्त्री पृ. 50–51
20. पं. हीरालाल शास्त्रीः विनोबा व्यक्तित्व और विचार, पृ.258
21. भगवान सहाय त्रिवेदी : राजस्थान के लौह पुरूष पं. हीरालाल शास्त्री पृ. 46
22. पं. हीरालाल शास्त्रीः प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र, (आत्म कथा) पृ. 66
23. भगवान सहाय त्रिवेदी : राजस्थान के लौह पुरूष पं. हीरालाल शास्त्री पृ. 47
24. पं. हीरालाल शास्त्री : प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र पृ. 58–59
25. लोकवाणी समाचार पत्र, दिनांक फरवरी 12.01.1944 पृ.3